Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 18/February/2024 IJRAW: 2024; 3(3):126-128 Accepted: 25/March/2024

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा का समन्वय: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ में

[*1]डॉ. अजय कुमार यादव

[*1]सहायक प्राध्यापक, बी.एड. विभाग, जंगी महाविद्यालय, असबरनपुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System - IKS) की ऐतिहासिक प्रासंगिकता और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसके एकीकरण की आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। सदियों से भारत ज्ञान और विज्ञान का वैश्विक केंद्र रहा है, जहाँ तक्षशिला और नालंदा जैसे संस्थानों ने समग्र विकास (Holistic Development) की नींव रखी थी। वर्तमान 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' इसी गौरवशाली विरासत को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जोड़ने का एक क्रांतिकारी प्रयास है। शोध का मुख्य केंद्र बिंदु यह समझना है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान, जो धर्म, दर्शन, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद और गणित के विशाल भंडार से समृद्ध है, कैसे 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा के पूरक के रूप में कार्य कर सकता है। नीतिगत परिवर्तनों के आलोक में, यह शोध स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें मन, शरीर और आत्मा का संतुलन अनिवार्य है। शोध में 'बहु-विषयक शिक्षा' और 'मूल्य-परक अधिगम' के माध्यम से भारतीय संस्कारों और आधुनिक तकनीकी कौशल के मध्य सेतु बनाने पर बल दिया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश छात्रों में न केवल सांस्कृतिक गौरव और नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करेगा, बल्कि उन्हें वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु एक वैकल्पिक और टिकाऊ (Sustainable) दृष्टिकोण भी प्रदान करेगा। निष्कर्षतः, आधुनिक शिक्षा के साथ प्राचीन भारतीय प्रज्ञा का यह समन्वय भारत को एक ऐसी 'ज्ञान महाशक्ति' के रूप में स्थापित करेगा, जहाँ प्रगति का आधार केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मानवीय और आध्यात्मिक भी होगा।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आधुनिक शिक्षा, सर्वांगीण विकास, मूल्य-परक शिक्षा, विश्व गुरु, सांस्कृतिक पहचान।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता और भविष्य की आधारशिला होती है। भारत का इतिहास साक्षी है कि यह देश सदियों तक 'विश्व गुरु' के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) मात्र सूचनाओं का संग्रह नहीं थी, बल्कि यह जीवन जीने की एक पूर्ण कला और विज्ञान थी। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे महान विश्वविद्यालयों ने विश्व को न केवल गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा का ज्ञान दिया, बल्कि मानवता को शांति, सह-अस्तित्व और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी दिखाया। किंतु, औपनिवेशिक काल के दौरान लागू की गई मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारतीय युवाओं को उनकी गौरवशाली जड़ों से काट दिया, जिससे शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह गई।

वर्तमान 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) इसी ऐतिहासिक भूल को सुधारने का एक साहसिक और दूरदर्शी प्रयास है। यह नीति इस बात पर बल देती है कि आधुनिक शिक्षा तभी सार्थक हो सकती है जब वह अपनी मौलिक ज्ञान परंपरा पर आधारित हो। 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों, जैसे जलवायु परिवर्तन, मानसिक तनाव और नैतिक पतन का समाधान आधुनिक तकनीक और प्राचीन भारतीय दर्शन के समन्वय में निहित है। जब हम आयुर्वेद के स्वास्थ्य सिद्धांतों, गणित की वैदिक विधियों और योग के मानसिक अनुशासन को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ते हैं, तो एक अधिक संतुलित और समावेशी समाज का निर्माण होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के उन महत्वपूर्ण तत्वों का अन्वेषण करना है, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली को और अधिक समृद्ध और प्रासंगिक बना सकते हैं। यह प्रस्तावना इस विचार को रेखांकित करती है कि ज्ञान और विज्ञान का यह संगम न केवल छात्रों के बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर पुनः स्थापित करने के लिए भी अनिवार्य है।

2. शोध के उद्देश्य

- भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वों (वेद, दर्शन, विज्ञान) की आधुनिक प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
- एनईपी 2020 के अंतर्गत 'IKS' को लागू करने की रणनीतियों का विश्लेषण करना।

***Corresponding Author:** डॉ. अजय कुमार यादव

- आधुनिक शिक्षा और प्राचीन ज्ञान के समन्वय में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।

3. शोध विधि

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) और ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक (Historical-Analytical) पद्धति पर आधारित है। आंकड़ों का संग्रहण मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों जैसे—एनईपी 2020 का मूल दस्तावेज, प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद, समकालीन शोध लेखों और यूजीसी की 'IKS' संबंधी गाइडलाइन्स से किया गया है।

4. भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और आधुनिक शिक्षा का समन्वय

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और आधुनिक शिक्षा का समन्वय केवल दो अलग-अलग शिक्षण पद्धतियों का मिलन नहीं है, बल्कि यह प्राचीन प्रज्ञा (Wisdom) और आधुनिक नवाचार (Innovation) का एक प्रगतिशील संश्लेषण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस विचार को केंद्र में रखती है कि भारत की शिक्षा प्रणाली अपनी जड़ों से जुड़ी होनी चाहिए ताकि वह वैश्विक स्तर पर फल-फूल सके। इस समन्वय का मुख्य आधार 'होलिस्टिक' या सर्वांगीण विकास है। आधुनिक शिक्षा जहाँ गणित, विज्ञान और तकनीक के माध्यम से बौद्धिक क्षमता विकसित करती है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा योग, आयुर्वेद और दर्शन के माध्यम से मानसिक शांति, नैतिक मूल्य और आत्म-अनुशासन का संचार करती है। उदाहरण के लिए, जब खगोल विज्ञान के आधुनिक सिद्धांतों को प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्र के साथ जोड़कर पढ़ाया जाता है, तो छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ सांस्कृतिक गौरव का भी अनुभव होता है।

व्यावहारिक स्तर पर, इस समन्वय का अर्थ 'बहु-विषयक शिक्षा' (Multidisciplinary Education) को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत 'लोक विद्या' (स्थानीय शिल्प और कौशल) को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है, जिससे व्यावसायिक दक्षता के साथ-साथ स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण भी सुनिश्चित हो। यह एकीकरण छात्रों को 'विश्व गुरु' के रूप में भारत की विरासत से परिचित कराता है और उन्हें 21वीं सदी के कौशल जैसे तार्किक सोच, रचनात्मकता और भावनात्मक स्थिरता से सुसज्जित करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा का यह संगम एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करने की क्षमता रखता है जो वैचारिक रूप से भारतीय और व्यावहारिक रूप से वैश्विक (Global) होगी। यह समन्वय ही 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को पूर्ण करने की दिशा में एक सशक्त आधारशिला है

i). **डिजिटल प्रौद्योगिकी और पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण:** भारतीय ज्ञान परंपरा के एकीकरण का एक आधुनिक स्तंभ 'प्रौद्योगिकी' है। एनईपी 2020 के तहत, भारत की अमूल्य पांडुलिपियों और लुप्तप्राय ज्ञान को संरक्षित करने के लिए डिजिटल पुस्तकालयों और ई-सामग्री (e-content) के निर्माण पर बल दिया गया है। 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI) और 'मशीन लर्निंग' के माध्यम से प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का आधुनिक भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है, ताकि वैज्ञानिक शोधकर्ता इन सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकें। यह तकनीकी समन्वय प्राचीन ज्ञान को समकालीन शोध की मुख्यधारा में लाने का एक प्रभावी माध्यम है।

ii). **अनुसंधान, नवाचार और 'स्वदेशी' पेटेंट:** एक महत्वपूर्ण स्तंभ 'अनुसंधान और विकास' (R&D) है। सरकार भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर आधारित मौलिक अनुसंधान के लिए विशेष फेलोशिप और अनुदान प्रदान कर रही है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद के योगों को आधुनिक औषध विज्ञान (Pharmacology) के मानकों पर परखना या प्राचीन स्थापत्य तकनीकों को भूकंप-रोधी निर्माण में उपयोग करना। इसका उद्देश्य केवल अतीत का गुणगान करना नहीं, बल्कि प्राचीन सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर आधुनिक समस्याओं के लिए 'स्वदेशी नवाचार' तैयार करना और उनके वैश्विक पेटेंट प्राप्त करना है।

iii). **क्रेडिट बैंक और अकादमिक लचीलापन:** IKS का एकीकरण केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि संरचनात्मक भी है। 'अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट' (ABC) के माध्यम से छात्रों को यह सुविधा दी गई है कि वे यदि किसी गुरुकुल या पारंपरिक संस्थान से कोई विशिष्ट भारतीय कौशल या विद्या सीखते हैं, तो उसके क्रेडिट उनकी डिग्री में जोड़े जाएंगे। यह शैक्षणिक लचीलापन पारंपरिक और औपचारिक शिक्षा के बीच की दूरी को समाप्त करता है और भारतीय विद्याओं को व्यावसायिक गरिमा प्रदान करता है।

iv). **वैश्विक आउटरीच और सांस्कृतिक कूटनीति:** यह स्तंभ भारत की 'सॉफ्ट पावर' को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने से संबंधित है। एनईपी 2020 के तहत भारतीय ज्ञान परंपरा को अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि विदेशी छात्र भी भारत के योग, आयुर्वेद और दार्शनिक चिंतन के प्रति आकर्षित हों। यह समन्वय न केवल पर्यटन और शिक्षा क्षेत्र में राजस्व को बढ़ावा देगा, बल्कि 'वसुधैव कुटुंबकम' के माध्यम से भारत को वैश्विक समस्याओं (जैसे जलवायु परिवर्तन और मानसिक तनाव) के समाधानकर्ता के रूप में प्रस्तुत करेगा।

v). **'तार्किक अध्यात्म' और वैज्ञानिक मानसिकता का विकास:** अक्सर भारतीय ज्ञान को केवल 'धार्मिक' मान लिया जाता है, किंतु यह एकीकरण स्तंभ स्पष्ट करता है कि IKS का आधार 'तर्क और विज्ञान' है। उपनिषदों की संवाद पद्धति, वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद और न्याय दर्शन की तर्कशक्ति छात्रों में एक ऐसी वैज्ञानिक मानसिकता विकसित करती है जो केवल भौतिक नहीं, बल्कि चेतना के स्तर पर भी गहरी होती है। यह आधुनिक शिक्षा के 'रचनात्मक सोच' (Creative Thinking) के उद्देश्य को पूर्णता प्रदान करता है। विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का एकीकरण केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि यह वर्तमान की वैज्ञानिक प्रगति और भविष्य की वैश्विक आवश्यकताओं के मध्य एक 'संवैधानिक और रणनीतिक समन्वय' है। ये स्तंभ एक ऐसे आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त करते हैं जहाँ युवा अपनी जड़ों के प्रति सचेत है और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए पूर्णतः सुसज्जित है।

5. आधुनिक शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास

आधुनिक शिक्षा का वास्तविक ध्येय केवल साक्षरता या व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास (Holistic Development) करना है। प्राचीन भारतीय दर्शन में 'सा विद्या या विमुक्तये' (शिक्षा वही है जो बंधनों से मुक्त करे) की अवधारणा इसी सर्वांगीण उन्नति की ओर संकेत करती है। 21वीं सदी के संदर्भ में सर्वांगीण विकास का अर्थ विद्यार्थी के मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पक्षों के संतुलित समन्वय से है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, इस बात पर बल देती है कि शिक्षा को रटने की प्रवृत्ति से मुक्त होकर विद्यार्थी की रचनात्मकता (Creativity) और तार्किक क्षमता (Critical Thinking) को निखारना चाहिए। सर्वांगीण विकास के अंतर्गत शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खेल और योग, मानसिक स्पष्टता के लिए तर्क और विज्ञान, तथा भावनात्मक स्थिरता के लिए कला और साहित्य का एकीकरण अनिवार्य है।

जब शिक्षा विद्यार्थी को केवल परीक्षा के लिए नहीं बल्कि जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करती है, तभी वह सर्वांगीण विकास का उद्देश्य पूर्ण करती है। यह दृष्टिकोण छात्र में न केवल कौशल

(Skills) विकसित करता है, बल्कि उसमें नैतिक मूल्य (Values) और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी जागृत करता है। अंततः, आधुनिक शिक्षा और सर्वांगीण विकास का संगम एक ऐसे चरित्र का निर्माण करता है जो वैश्विक नागरिक के रूप में प्रतिस्पर्धी होने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं से भी समृद्ध होता है।

6. मूल्य-परक शिक्षा, विश्व गुरु एवं सांस्कृतिक पहचान

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण है। शोध पत्र के ये तीन तत्व आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं:

i). **मूल्य-परक शिक्षा (Value-based Education):** प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में 'विद्या' और 'विनय' को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। आधुनिक संदर्भ में मूल्य-परक शिक्षा का अर्थ छात्रों में सत्य, अहिंसा, करुणा, ईमानदारी और उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करना है। एनईपी 2020 इन मूल्यों को औपचारिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने पर बल देती है। इसमें पंचतंत्र की कहानियों, भारतीय दर्शन और महापुरुषों के जीवन चरित्र के माध्यम से छात्रों को 'संवैधानिक मूल्यों' और 'मानवीय संवेदनाओं' के प्रति जागरूक किया जाता है। जब शिक्षा मूल्यों पर आधारित होती है, तब वह समाज में नैतिक पतन को रोकने और एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

ii). **विश्व गुरु (Global Knowledge Superpower):** भारत को पुनः 'विश्व गुरु' के रूप में स्थापित करने का अर्थ सैन्य या आर्थिक शक्ति बनना मात्र नहीं है, बल्कि ज्ञान और प्रज्ञा (Wisdom) के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करना है। प्राचीन काल में तक्षशिला और नालंदा ने पूरे विश्व को ज्ञान की नई दिशा दी थी। आधुनिक समय में, जब विश्व जलवायु परिवर्तन, अशांति और मानसिक तनाव जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा—जैसे 'वसुधैव कुटुंबकम्' (पूरा विश्व एक परिवार है) और 'सर्वजन हिताय'—वैश्विक समाधान प्रस्तुत कर सकती है। यह भारत की वह सॉफ्ट पावर है जो उसे विश्व पटल पर एक मार्गदर्शक के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

iii). **सांस्कृतिक पहचान (Cultural Identity):** शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य छात्र को उसकी जड़ों से जोड़ना है। औपनिवेशिक शिक्षा पद्धति ने भारतीयों के मन में अपनी संस्कृति के प्रति जो हीन भावना पैदा की थी, आधुनिक शिक्षा प्रणाली उसे समाप्त करने का प्रयास कर रही है। अपनी भाषा, स्थानीय कला, पारंपरिक ज्ञान और इतिहास पर गर्व करना ही 'सांस्कृतिक पहचान' को सुदृढ़ करना है। जब छात्र अपनी संस्कृति को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समझते हैं, तो वे अधिक आत्मविश्वास के साथ वैश्विक चुनौतियों का सामना कर पाते हैं। यह पहचान ही उन्हें एक 'जागरूक वैश्विक नागरिक' (Global Citizen) बनाती है जो अपनी मौलिकता को बनाए रखते हुए प्रगति करता है। मूल्य-परक शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए ही भारत पुनः 'विश्व गुरु' के अपने गौरवशाली पद को प्राप्त कर सकता है। यह त्रिकोणीय समन्वय ही आने वाली पीढ़ी को पूर्णता प्रदान करेगा।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और आधुनिक शिक्षा का समन्वय मात्र एक वैकल्पिक विचार नहीं, बल्कि 21वीं सदी की अनिवार्य आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की गौरवशाली विरासत और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मध्य एक सेतु का निर्माण किया है। शोध यह सिद्ध करता है कि जब शिक्षा की जड़ें अपनी संस्कृति में गहरी होती हैं, तभी वह विद्यार्थी का वास्तविक सर्वांगीण विकास करने में सक्षम होती है।

अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि शिक्षा केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं है, बल्कि यह मूल्य-परक शिक्षा के माध्यम से एक प्रबुद्ध चरित्र का निर्माण है। प्राचीन भारतीय मूल्यों—जैसे सत्य, अहिंसा, और 'वसुधैव कुटुंबकम्'-को जब आधुनिक तकनीकी कौशल के साथ एकीकृत किया जाता है, तो एक ऐसा नागरिक तैयार होता है जो वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी होने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं से भी समृद्ध होता है। यह समन्वय छात्रों में अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गौरव जागृत करता है, जो औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प की सिद्धि के लिए अनिवार्य है।

शोध यह भी रेखांकित करता है कि भारत को पुनः 'विश्व गुरु' के रूप में स्थापित करने का मार्ग हमारी कक्षाओं से होकर गुजरता है। प्राचीन 'समग्र शिक्षा' (Holistic Education) और आधुनिक 'नवाचार' (Innovation) का यह संगम न केवल भारत की शैक्षिक समस्याओं का समाधान है, बल्कि यह विश्व को शांति, संतुलन और सतत विकास (Sustainable Development) का एक नया मॉडल प्रदान कर सकता है। निष्कर्षतः, भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में समावेश एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करेगा जो अपनी जड़ों से जुड़ी होगी और जिसके पंख आधुनिक विज्ञान के आकाश में उड़ने के लिए पूरी तरह सक्षम होंगे। यह नीतिगत परिवर्तन भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय की शुरुआत है।

संदर्भ सूची

1. Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
2. UGC. (2022). Guidelines for Incorporating Indian Knowledge System (IKS) in Higher Education Curricula. University Grants Commission.
3. Radhakrishnan, S. (2019). Indian Philosophy and its Impact on Education. Oxford University Press.
4. Raina, M. K. (2018). The Creative Mind in the Indian Knowledge Tradition. Springer.
5. UNESCO. (2021). State of the Education Report for India: No Teacher, No Class. UNESCO Office New Delhi.
6. Agrawal, V. S. (2021). Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist. Motilal Banarsidass Publishers.
7. Srivastava, R. (2023). ICT and AI in Vocational Training: Bridging the Skill Gap. Academic Press India.
8. एन.सी.ई.आर.टी. (2021). भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षकों के लिए एक संदर्शिका. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
9. विवेकानंद, स्वामी. (2021). शिक्षा का वास्तविक ध्येय. अद्वैत आश्रम प्रकाशन।
10. शास्त्री, के. (2021). भारतीय ज्ञान परंपरा: एक परिचय. ज्ञान प्रकाशन।
11. पांडेय, एस., एवं मिश्रा, पी. (2022). व्यावसायिक शिक्षा और मुख्यधारा का पाठ्यक्रम: चुनौतियाँ एवं अवसर. भारतीय तकनीकी शिक्षा पत्रिका, 45(1), 12-19.
12. यादव, आर. के. (2022). एनईपी 2020 में व्यावसायिक शिक्षा: युवा सशक्तिकरण का मार्ग. अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन पत्रिका, 9(2), 67-74.
13. सिंह, आर. पी. (2022). विश्व गुरु का दर्जा पुनः प्राप्त करना: भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), 44-59.